SJIF Impact Factor - 5.34

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

November 2021, Special Issue 03, Vol. IV

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ

For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

Scanned with OKEN Scanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact-
November 2021 Special Issue 03 Vol. IV

Sr.No	Title of the Paper & Author's Name	Pg.No
29	साहित्य में नारी चित्रण : मैत्रेयी पुष्पा के संदर्भ में- डॉ. काकासो बापूसो भोसले	103
30	'स्त्री मेरे भीतर' कविता संग्रह में चित्रित नारी संवेदना - प्रा. शैलजा टिळे	105
31	सामंतवादी बर्बरता को कुरेदता यथार्थ - डॉ. विकास विलासराव पाटील	108
32	`गिलिगडु` उपन्यास में अभिव्यक्त वृध्द विमर्श – डॉ. वैशाली विठ्ठल खेडकर	110
33	हिंदी साहित्य के स्त्री साहित्यकारों की कहानियों में स्त्री–विमर्श - प्रा. ज्ञानेश्वर किसन बगनर	113
34	हिंदी उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी शोषण ('एक पत्नी के नोट्स' और 'विजन' उपन्यास के संदर्भ में) - डॉ.सविता शिवलिंग मेनकुदळे	115
35	समकालीन हिंदी कविताओं में चित्रित नारी विमर्श – लैफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील	119
36	ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'दो चेहरे'नाटक में अभिव्यक्त दलित चेतना - प्रा. जगन्नाथ आबासो पाटील	122
37	कुसुम कुमार और हरिशंकर परसाई के साहित्य में व्यंग्य (दिल्ली उँचा सुनती है, भोलाराम का जीव) -प्रा. डॉ. सौ. शकुंतला प्रताप वाघ	125
38	भगवानदास मोरवाल कृत 'रेत' उपन्यास मे ग्रामीण जीवन' -प्रा. सूर्यकांत विश्वनाथ आमलपुरे	127
39	हिंदी साहित्य में आदिवासी का चित्रण - डॉ. आर. पी. भोसले	129
40	महिला उपन्यासकारों के उपन्यासो में नारी के विविध रूप- प्रा. विश्वास निवृत्ती पाटील	131
41	मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'फैसला' एक मौन विद्रोह- अस्मिता अरविंद रुईकर / डॉ.किरण ल. पिंजारे	134
42	काशिनाथ सिंह के 'महुआचरित' उपन्यास में शोषित वर्ग का चित्रण- सोमनाथ तातोबा कोळी	137
43	21वीं सदी में नारी शोषण के विविध रूप - प्रा नितीन हिंदुराव कुंभार	139
44	`साकेत` में कैकेयी का चित्रण - कालियानंतम पी.	143
45	हिंदी कहानी में दलित शोषण का चित्रण (प्रेमचंदकृत - ठाकुर का कुआं कहानी के विशेष संदर्भ में) - डॉ.बलवंत बी.एस	149
46	कमलेश्वर कृत `अनबीता व्यतीत` उपन्यास में नारी चित्रण - प्राजक्ता राजेंद्र प्रधान / डॉ. अशोक मोहन मरळे	151
47	भारतीय का सबसे वंचित वर्ग : किसान (हिंदी कविताओं के परिप्रेक्ष्य में) - प्रा. मारूफ समशेर मुजावर	154
48	ज्योति जैन की कहानी में नारी अस्मिता का बदलता परिवेश - माधवी बसवानी पिटुक	157
49	दलित आत्मकथाओं में चित्रित भेदभाव - डॉ. प्रकाश आठवले	161
50	जगदंबा प्रसाद दीक्षित और मधु मंगेश कर्णिक के उपन्यासों में महानगरीय परिवेश की यथार्थता का तुलनात्मक अध्ययन - सौ.वृषाली महादेव माळी	165
51	'फाँस' किसान जीवन की संघर्षगाथा - डॉ. सचिन राजाराम जाधव	170

Scanned with OKEN Scanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54
November 2021 Special Issue 03 Vol. IV

47

भारतीय का सबसे वंचित वर्ग : किसान
(हिंदी कविताओं के परिप्रेक्ष्य में)

प्रा. मारूफ समशेर मुजावर
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
मी एस एस कॉलेज हुपरी जिला- कोल्हापुर
मो. 9822780357

भारतीय किसान अनादि काल से अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। उच्चभ्रू जमिनदार, साहूकार आदि ने भूमिहीन किसानों और निम्न जातियों का हमेशा ही शोषण किया है। देश में विविध असमानताओं का सामना भूमिहीन किसान कर रहा है। एक तरफ बड़े जमिनदार आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से संपन्न हैं तो दूसरी तरफ भूमिहीन किसान बेरोजगारी, गरीबी आदि समस्याओं से ग्रस्त हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद किसानों की समस्या का समाधान करने के विविध प्रयत्न किए गए हैं। लेकिन आज भी समस्या जहाँ की वहाँ है। महँगाई के बढ़ते किसानों की आत्महत्या आज गंभीर समस्या बन चुकी है। कवि देवेंद्रकुमार मिश्र अपनी कविता में लिखते हैं कि,

"किसानों की दुर्दशा / जिस दशे में जवानों के
. . . . . .
पर भारी पड़ रहा हो / और सरकार मौन ।"

आज का कवि चुप नहीं बैठा है, वह अपनी कविता में किसानों द्वारा हो रही आत्महत्या का विरोध करता है । कवि अरुण कमल के शब्दों में –

"नहीं यह चुप बैठने का समय नहीं
. . . . . .
उठो और छुरी की धार को उलट दो ।"

भारत कृषि प्रधान देश है । किसी ने इस देश को 'सोने की चिड़िया' कहा है । देश के खेत ही भारत की मूल संपदा है । लेकिन आज औद्योगिकरण के बढ़ते खेत मिटते जा रहे हैं । वैसे देखा जाय तो किसानों का कर्ज और बदला हुआ मौसम भी इसके प्रमुख कारण रहे हैं । मजबुरी में खेत बिकने का दर्द कवि कुमार विरेंद्र प्रकट करते हैं –

"तब मैं उस खेत में भला / कैसे घुसता, तोड़ता
. . . . . .
जाना, कि खेत बिक जाना / क्या होता है ।"

वर्तमान युग में आधुनिकता के कारण मिटती हुई किसानों की पहचान की ओर इशारा करते हुए कवि संजय कुदन लिखते हैं कि,

"खेत खलिहान की कोई खबर / इस तरह देखते हो
. . . . . .
जैसे प्राचीन इतिहास का कोई पन्ना उलट रहे हो ।"

प्रेमरंजन अनिमेष की कविता में नष्ट होते खेतों के बारे में चिंता इस प्रकार व्यक्त हुई है,

"जिंदा है आलू / जीवित दुनिया
. . . . . .
नष्ट कर दिए गए सारे के सारे ।"

देश की प्रगति में श्रमिक वर्ग का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है । निलेश रघुवंशी अपनी कविता में लिखते हैं–

"मालगाडी के नीचे से चाय की केतली लिए
. . . . . .

Scanned with OKEN Scanner

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54
November 2021 Special Issue 03 Vol. IV

तो राहत की सॉस, चाय की बन उडती है ।''

आज देश में कई कंपनियॉ जो पूर्णतः किसान तथा श्रमिक वर्ग पर निर्भर हैं । इनके श्रम के कारण ही हम जीवन की सभी सुविधाओं को प्राप्त करते हैं । लेकिन हमें सुविधा देनेवाला यह वर्ग हररोज पीडा एवं शोषण से गुजरता रहता है ।

किसान वर्ग की रोजी–रोटी की तलाश आज की प्रमुख समस्या बन चुकी है । उसे शहर लुभावने सपने दिखाकर अपने पास बुलाता है पर वह पूरे करने की कोई गारंटी नहीं है । कवि केशरीनाथ त्रिपाठी लिखते हैं कि

''प्रकृति यहाँ द्यूत बन रही / नीति यहाँ कूट बन रही
. . . . . .
नीत रोज कर रहे हैं घात / रीति भी कुरीति बन रही ।''

वर्तमान ग्रामीण एवं किसानों के जीवन की दशा को देखकर कवि के मन में अनेक प्रश्न उठते हैं । कवि केशरीनाथ के शब्दों में,

''बहुत से प्रश्न उपजे हैं मन में / मैं खाया हूँ भीड़ में
. . . . . .
मैं भटका हूँ / पराई संस्कृति के चाव से ।''

देश विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में काफी आगे बढ़ गया है । फिर भी आज के भारत में कई गॉव ऐसे हैं, जहाँ जरूरी आवश्यक सुविधाओं का अभाव रहता है । बिजली और पानी की कमी हमेशा रहती है । गॉवों में कई किसान परिवार भूखे पेट अपना जीवन गुजार रहे हैं । वर्तमान समय में किसानों के जीवन में आ रहे परिवर्तनों को देखकर कवि दुःखी है । ग्रामीण सभ्यता, संस्कृति को आज की भौतिकवादी तथा मशीनी सभ्यता ने न केवल प्रभावित किया है बल्कि मनुष्य और प्रकृति का नाता टूटता जा रहा है । कवि धूमिल जी लिखते हैं कि

''खेतों में खड़ा किसान मिट्टी हो गया है और
अनाज के ढेर पर बैठा बनिया सोना बन गया है ।''

कवि तुषार धवल जी अपनी कविता में किसान वर्ग के दर्द को इस प्रकार व्यक्त करते हैं –

''हम ठगे गए लोग हैं
. . . . . .
तुम्हारे पास सुख की मरूभूमि है ।
वहाँ और हमारे पैर नंगे ।''

वर्तमान उपनिवेशवादी संस्कृति के कारण किसानों को श्रमिक बनाकर अपने ही गॉव व शहर में दर–दर भटकने के लिए मजबूर कर दिया । कवि अरुण कमल जी लिखते हैं –

''और मेरा चेहरा फूटा हुआ ढेला कम्प्युटर का दाना
. . . . . .
शरणार्थी भविष्य के ।''

जो किसान अपने खेतों में श्रम को बेचता, किंतु उसके मूल्य से वंचित जीवन की छोटी–छोटी जरूरतों को पूर्ण नहीं कर पाता । आखिर हाटकर वह नौकरी की तलाश में भटकने लगा । इसका चित्रण आधुनिक संवेदना के कवि ने बखुबी किया है ।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि इस प्रकार आज के कवियों ने आधुनिक युग में किसानों की स्थिति पर प्रकाश डाला है । भारत में कृषि क्षेत्र व्यापारीकरण, भूमंडलीकरण, औद्योगीकरण जैसे अनेक तत्त्वों से प्रभावित हुआ है । किसान की सबसे किमती वस्तु उसकी जमीन के छीन जाने की व्यथा है । इसी वजह से किसान अपने आप को बेबस और लाचार महसूस कर रहा है । उसकी बेबसी आधुनिक हिंदी कविता में मुखरता से अभिव्यक्त हुई है ।

संदर्भ ग्रंथ –

1) समकालीन हिंदी कविता के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर – डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र

Scanned with OKEN Scanner